रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय, जबलपुर

पर्यावरण संरक्षण के लिए हो संस्कृति से प्राप्त परम्परागत ज्ञान का उपयोग–कुलपति प्रो. मिश्र

अंतर्राष्ट्रीय पर्यावरण दिवस पर रादुविवि में राष्ट्रीय वेबिनार का आयोजन

जबलपुर 03 जून। हमारे महर्षि यह भली प्रकार जानते थे कि पेड़ों में भी चेतना होती है। इसलिए उन्हें मनुष्य के समतुल्य माना गया है। ऋ ग्वेद से लेकर बृहदारण्यकोपनिषद्, पद्मपुराण और मनुस्मृति सहित अन्य वाङ्मयों में इसके संदर्भ मिलते हैं। हमारी संस्कृति ने हमें बहुत कुछ सिखाया है। ये सभी कुछ हमें संस्कृति से परंपरागत ज्ञान के रूप में मिला है। हमें पर्यावरण के साथ आजीविका को जोड़ना होगा, ताकि पर्यावरण भी ठीक रहे और आजीविका भी चलती रहे। हर स्थान पर अपनी–अपनी वनस्पतियों का संरक्षण करना होगा। जड़ी–बूटियों को उगाने पर जोर देना होगा। उपरोक्त विचार माननीय कुलपति प्रो. कपिल देव मिश्र ने गुरुवार को अंतर्राष्ट्रीय पर्यावरण दिवस के मौके पर आयोजित राष्ट्रीय वेबिनार की अध्यक्षता करते हुए व्यक्त किये।

अंतर्राष्ट्रीय पर्यावरण दिवस के उपलक्ष्य में रादुविवि व्यवसायिक अध्ययन एवं कौशल विकास संस्थान एवं महाकोशल विज्ञान परिषद् के संयुक्त तत्वावधान में स्वास्थ्य रक्षक औषधीय गृहवाटिका विषय पर आयोजित राष्ट्रीय वेबिनार में मुख्य अतिथि श्री प्रवीण रामदास, राष्ट्रीय सचिव विज्ञान भारती ने कहा कि हमें हमारी संस्कृति और परंपरागत ज्ञान के आधार पर अच्छा जीवन व्यतीत करने पर जोर देना होगा। यदि हम वास्तव में पर्यावरण संरक्षण करना चाहते हैंए तो हमें ग्रीन इकोनॉमी को जन्म देना होगा। आयोजन संयोजक संकायाध्यक्ष जीव विज्ञान एवं निदेशक विवि कौशल विकास विभाग प्रो. सुरेन्द्र सिंह ने बताया कि विश्व पर्यावरण दिवस पर इस वर्ष की थीम पारिस्थितिकी तंत्र की बहाली या मरम्मत रखी गयी है। आयोजित वेबिनार में पर्यावरण पुर्ननिर्माण के साथ–साथ घर–घर में औषधीय पौधों को लगाया पर जोर दिया गया। वेबिनार में मप्र विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी परिषद भोपाल के महानिदेश डॉ. अनिल कोठारी, रादुविवि प्रभारी कुलससचिव प्रो. एनजी पेण्डसे ने स्वास्थ्य रक्षक वाटिका की उपयोगिता पर जानकारी प्रस्तुत की।

तकनीकी सत्र का आयोजन –

राष्ट्रीय वेबिनार में वक्ता के रूप में डॉ. ए.के. पाण्डेय, पूर्व सहायक महानिदेशक आईसीएफआर देहरादून, डॉ. उदय होमकर, वरिष्ठ वैज्ञानिक, एसएफआईआर, जबलपुर ने औषधीय गृहवाटिका हेतु उपयुक्त प्रजातियां पर विस्तृत जानकारी प्रदान की। वक्ता डॉ. मधुसूदन देशपांडे, आयुर्वेदाचार्य, भोपाल, डॉ. जी.एल. टिटोनी, पूर्व प्राचार्य, आयुर्वेदिक कॉलेज, जबलपुर ने उपयोगी जानकारी प्रदान की। संचालन आयोजन संयोजक एवं महाकोशल विज्ञान परिषद अध्यक्ष प्रो. सुनीता शर्मा ने किया।